साहित्यिक-परिचय

सुमित्रानन्दन पन्त

जीवन-परिचय :—

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त जी का जन्म सन् 1900 ई॰ में अल्मोड़ा के निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। प्राराम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में ही हुई। बचपन का नाम गुसांईदत्त था। हिन्दी माता की सेवा करते हुए हिन्दी का यह अमर पुत्र सन 1977 ई॰ में पंचतत्व में लीन हो गया।

साहित्यिक परिचय :—

सुमित्रानन्दन पंत जी की प्रथम कविता गिरजे का घंटा सन् 1916 ई० में प्रकाशित हुई तत्पश्चात इनकी रचनाएँ 'उच्छवास' एवं ग्रन्थि सन् 1920 में प्रकाशित हुई साथ ही सन् 1927 ई० में वीणा 1928 ई० में 'पल्लव' नामक कविता संग्रह प्रकाशित हुए।

कुछ दिन कालाकांकर में ठहरे। पुनः प्रयाग आकर 'रुपाभा' नामक पात्रिका का संपादन कार्य संभाला।

अरविन्द घोष जी से मुलाकात के बाद पंत जी अरविंद दर्शन की ओर उन्मुख हुए और अपनी रचनाओं में अरविन्द दर्शन को पिरोया।

कला और बूढ़ा चाँद पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, लोकायतन पर सोवियत एवं चिदम्बरा नामक कृति पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त किया।

रचनाएँ :— प्रमुख कृतियाँ निम्न लिखित हैं—

(1) लोकायतन
(2) वीणा
(3) पल्लव
(4) गुंजन
(5) ग्रन्थि

अन्य — स्वर्ण धूलि, स्वर्ण किरण, उत्तरा युगपथ, अतिमा, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या आदि।